IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Impact Factor: 5.731
Volume 6, Issue 4, April 2026

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य संबंध का अध्ययन

अमित कुमार

शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र), मेजर एस.डी. सिंह विश्वविद्यालय, फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश

डॉ. अनुराग सिंह

सहा. आचार्य, शिक्षा विभाग, मेजर एस.डी. सिंह विश्वविद्यालय, फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश

सारांश

विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता केवल अच्छे पाठ्यक्रम, पर्याप्त शिक्षण सामग्री या विद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं से तय नहीं होती। इसके पीछे शिक्षक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक स्वयं मानसिक रूप से किस स्थिति में है और वह अपने शिक्षण कार्य को किस प्रकार करता है, इसका प्रभाव कक्षा के वातावरण पर भी दिखाई दे सकता है। आज शिक्षक को पढ़ाने के साथ-साथ मूल्यांकन, अभिलेख तैयार करने, विद्यार्थियों की विभिन्न आवश्यकताओं को समझने तथा अनेक अन्य शैक्षिक कार्यों की जिम्मेदारी निभानी पड़ती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गैर-शैक्षणिक एवं प्रशासनिक कार्यों के अतिशय भार के कारण शिक्षकों के मूल शिक्षण दायित्वों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति का अध्ययन करना, उनकी शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना तथा दोनों के मध्य संबंध ज्ञात करना था। अध्ययन के लिए कानपुर देहात जनपद के मैथा ब्लॉक में माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत 120 शिक्षकों का चयन किया गया। नमूना चयन के लिए बहु-स्तरीय याद्दच्छिक नमूना चयन पद्धति का प्रयोग किया गया। अध्ययन में वर्णनात्मक-सहसंबंधात्मक शोध अभिकल्प अपनाया गया। आँकड़ों के संकलन के लिए मानकीकृत मानसिक स्थिति मापनी तथा शिक्षक शिक्षण प्रभावशीलता मापनी का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन तथा पियर्सन उत्पाद-आघूर्ण सहसंबंध गुणांक के माध्यम से किया गया। प्राप्त परिणामों में शिक्षकों की मानसिक स्थिति का मध्यमान 156.18 तथा मानक विचलन 18.74 पाया गया। वहीं शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान 72.61 तथा मानक विचलन 8.76 रहा। मानसिक स्थिति एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सकारात्मक मध्यम स्तर का सहसंबंध प्राप्त हुआ ($r = 0.41, p < .01$)। इससे संकेत मिलता है कि जिन शिक्षकों की मानसिक स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर रही, उनमें शिक्षण

प्रभावशीलता भी अपेक्षाकृत अधिक पाई गई। अध्ययन के आधार पर शिक्षक कल्याण, तनाव प्रबंधन और विद्यालय में सकारात्मक कार्य वातावरण को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

बीज शब्द: मानसिक स्थिति, शिक्षण प्रभावशीलता, माध्यमिक शिक्षक, सहसंबंध, शिक्षक कल्याण, कानपुर देहात।

1.प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति के जीवन को दिशा देने के साथ-साथ समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा की पूरी प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि पाठ्यक्रम और पुस्तकें तभी उपयोगी बनती हैं जब उन्हें विद्यार्थियों तक प्रभावी ढंग से पहुँचाने वाला शिक्षक मौजूद हो। विद्यालय में कितनी भी अच्छी सुविधाएँ क्यों न हों, अंततः कक्षा में शिक्षक का ज्ञान, व्यवहार और विद्यार्थियों के प्रति उसका दृष्टिकोण ही शिक्षण को प्रभावी बनाता है।

माध्यमिक स्तर की शिक्षा इस दृष्टि से और भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस अवस्था में विद्यार्थी किशोरावस्था से गुजर रहे होते हैं। उनके व्यवहार, सोच, रुचियों और भावनाओं में तेजी से बदलाव आता है। किशोरावस्था में विद्यार्थियों के संवेगात्मक एवं व्यवहारात्मक परिवर्तनों के कारण अधिगम रुचि में उतार-चढ़ाव देखा जाता है। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षक को केवल विषय पढ़ाने वाला व्यक्ति बनकर नहीं रहना पड़ता, बल्कि उसे विद्यार्थियों की भावनाओं को समझने, उन्हें प्रेरित करने और कक्षा में अनुशासन बनाए रखने की जिम्मेदारी भी निभानी पड़ती है। इसके लिए शिक्षक का स्वयं मानसिक रूप से संतुलित होना आवश्यक है। आज शिक्षक के कार्यक्षेत्र में भी काफी बदलाव आया है। पहले शिक्षण कार्य मुख्य रूप से कक्षा में पढ़ाने और विद्यार्थियों की कॉपियाँ जाँचने तक सीमित समझा जाता था। वर्तमान में शिक्षक को परीक्षा और मूल्यांकन के साथ अभिलेख तैयार करने, विभिन्न शैक्षिक योजनाओं में कार्य करने, विद्यार्थियों एवं अभिभावकों से संपर्क रखने और विद्यालय से जुड़े अन्य दायित्वों का भी निर्वहन करना पड़ता है। इन सभी जिम्मेदारियों के बीच शिक्षक पर कार्य का दबाव बढ़ना स्वाभाविक है। इसलिए यह जानना आवश्यक हो जाता है कि इन परिस्थितियों का उसकी मानसिक स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ता है और क्या इसका संबंध उसके शिक्षण कार्य से भी दिखाई देता है।

मानसिक स्थिति से आशय व्यक्ति की उस मनोवैज्ञानिक अवस्था से है जिसमें वह अपने विचारों, भावनाओं, समस्याओं और दैनिक जीवन की परिस्थितियों को संतुलित रूप से संभाल सके। एक शिक्षक की

मानसिक स्थिति उसके कार्य के प्रति दृष्टिकोण, विद्यार्थियों के साथ उसके व्यवहार और कक्षा में अपनाए जाने वाले शिक्षण व्यवहार को प्रभावित कर सकती है। यदि शिक्षक स्वयं मानसिक दबाव में है, तो उसके लिए हर परिस्थिति में धैर्य और सकारात्मकता बनाए रखना आसान नहीं होता।

शिक्षण प्रभावशीलता का संबंध शिक्षक की उस क्षमता से है जिसके द्वारा वह विद्यार्थियों को विषय-वस्तु समझाने, उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करने, कक्षा को व्यवस्थित रखने तथा निर्धारित शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है। प्रभावी शिक्षक केवल पाठ समाप्त करने पर ध्यान नहीं देता, बल्कि यह भी देखता है कि विद्यार्थियों ने वास्तव में कितना समझा और सीखा। यही बात शिक्षण को केवल "पाठ पूरा करने" से आगे ले जाती है।

भारतीय संदर्भ में भी मानसिक स्वास्थ्य और शिक्षक की कार्यक्षमता के बीच संबंध को लेकर विभिन्न अध्ययन किए गए हैं। Kundu एवं Bej के अध्ययन में भारतीय विद्यालयी शिक्षकों की मानसिक स्वास्थ्य स्थिति और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया। अध्ययन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा शिक्षक स्वायत्तता जैसे पक्षों को भी महत्वपूर्ण माना गया। इससे यह संकेत मिलता है कि शिक्षक की मानसिक स्थिति उसके शिक्षण कार्य से जुड़ी हो सकती है।

हालाँकि, सभी अध्ययनों के परिणाम एक जैसे नहीं रहे हैं। Kumara द्वारा मैसूर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के 320 शिक्षकों पर किए गए अध्ययन में मानसिक स्वास्थ्य और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच महत्वपूर्ण संबंध नहीं पाया गया, जबकि कार्य-संतुष्टि और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच संबंध पाया गया। इससे यह समझने में मदद मिलती है कि शिक्षक की प्रभावशीलता केवल मानसिक स्थिति पर निर्भर नहीं करती, बल्कि कार्य-संतुष्टि, विद्यालयी वातावरण और अन्य व्यावसायिक परिस्थितियाँ भी इसमें भूमिका निभा सकती हैं।

हालिया राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय अध्ययनों में भी शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य और उसकी कार्यक्षमता के मध्य स्पष्ट अंतर्संबंध रेखांकित किया गया है। NCERT (2024) के मनोदर्पण सर्वेक्षण तथा चौधरी व छाजेड़ (2023) के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि प्रशासनिक कार्यभार शिक्षकों की मानसिक स्थिति और शिक्षण प्रभावशीलता को सीधे प्रभावित करता है। इसी क्रम में टिक्कादर व आचार्य (2025) तथा प्रभु व अन्य (2024) ने सिद्ध किया कि कक्षा प्रबंधन व विषय प्रस्तुतीकरण में वही शिक्षक अधिक दक्ष पाए जाते हैं जिनका मनोवैज्ञानिक संतुलन बेहतर होता है।

इन पूर्ववर्ती अध्ययनों के अवलोकन से पता चलता है कि शिक्षकों की मानसिक स्थिति एवं शिक्षण प्रभावशीलता के बीच संबंध को लेकर सभी अध्ययनों में समान निष्कर्ष नहीं मिले हैं। इसके अतिरिक्त,

उपलब्ध शोधों का एक बड़ा हिस्सा शहरी या अपेक्षाकृत व्यवस्थित विद्यालयी परिवेश तक सीमित रहा है। उत्तर प्रदेश के अर्ध-शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक शिक्षकों की कार्य-स्थितियों और व्यावसायिक चुनौतियों से संबंधित अनुभवजन्य अध्ययनों की अपेक्षाकृत कमी दिखाई देती है। इसी शोध-अंतराल को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन कानपुर देहात के मैथा ब्लॉक के माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों पर केंद्रित किया गया है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि स्थानीय परिस्थितियों में शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के बीच किस प्रकार का संबंध पाया जाता है। आखिर हर विद्यालय का माहौल एक जैसा नहीं होता, इसलिए हर जगह के शिक्षक के अनुभव भी बिल्कुल एक जैसे होना जरूरी नहीं है।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

विद्यालयी शिक्षा की सफलता में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक केवल पाठ्यक्रम पूरा करने वाला व्यक्ति नहीं है, बल्कि वह विद्यार्थियों के सीखने, व्यवहार और व्यक्तित्व विकास में भी योगदान देता है। इसलिए शिक्षक की अपनी मानसिक स्थिति और उसके शिक्षण कार्य की प्रभावशीलता को समझना आवश्यक है। माध्यमिक स्तर पर यह विषय और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। इस स्तर पर विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं और उनकी शैक्षिक तथा भावनात्मक आवश्यकताएँ तेजी से बदलती रहती हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षक को विषय पढ़ाने के साथ-साथ विद्यार्थियों के व्यवहार और उनकी व्यक्तिगत समस्याओं को भी समझना पड़ता है। इसके लिए शिक्षक का मानसिक रूप से संतुलित होना उपयोगी हो सकता है।

वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता और महत्त्व को निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है—

1. शिक्षक की मानसिक स्थिति उसके व्यावसायिक व्यवहार का महत्वपूर्ण पक्ष है।
2. माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ अपेक्षाकृत जटिल होती हैं।
3. शिक्षण प्रभावशीलता विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता से सीधे जुड़ी हुई है।
4. शिक्षक की मानसिक स्थिति और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच संबंध को स्थानीय संदर्भ में समझना आवश्यक है।
5. कानपुर देहात जैसे जनपद के संदर्भ में स्थानीय स्तर पर प्राप्त आँकड़े उपयोगी हो सकते हैं।
6. अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षक कल्याण कार्यक्रमों के निर्माण में सहायक हो सकते हैं।
7. अध्ययन विद्यालय प्रशासन को शिक्षकों की कार्य परिस्थितियों को बेहतर समझने में सहायता कर सकता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

वर्तमान अध्ययन के केवल निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं—

उद्देश्य 1: माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति का अध्ययन करना।

उद्देश्य 2: माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

उद्देश्य 3: माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य संबंध ज्ञात करना।

4. शोध परिकल्पना

अध्ययन के तीसरे उद्देश्य के अनुरूप निम्न शून्य परिकल्पना निर्धारित की गई—

शून्य परिकल्पना: माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।

पहले दो उद्देश्य वर्णनात्मक प्रकृति के हैं। इसलिए उनके लिए तुलनात्मक परिकल्पनाएँ निर्धारित नहीं की गईं।

5. शोध अभिकल्प

वर्तमान अध्ययन में **वर्णनात्मक-सहसंबंधात्मक शोध अभिकल्प** अपनाया गया। अध्ययन के प्रथम एवं द्वितीय उद्देश्यों के लिए वर्णनात्मक विधि तथा तृतीय उद्देश्य के लिए सहसंबंधात्मक विधि का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन में किसी चर को प्रयोगात्मक रूप से परिवर्तित नहीं किया गया। शिक्षकों की वर्तमान मानसिक स्थिति तथा शिक्षण प्रभावशीलता को मापकर दोनों के मध्य संबंध का अध्ययन किया गया।

6. अध्ययन की जनसंख्या, नमूना एवं नमूना चयन

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या में कानपुर देहात जनपद के मैथा विकासखंड के अंतर्गत उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक सम्मिलित किए गए। अध्ययन के लिए मैथा विकासखंड को अध्ययन क्षेत्र के रूप में निर्धारित किया गया।

अध्ययन की जनसंख्या में से कुल 20 उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया। इन चयनित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में से कुल 120 शिक्षकों को अध्ययन के अंतिम नमूने के रूप में सम्मिलित किया गया। इस प्रकार चयनित विद्यालयों से औसतन लगभग 6 शिक्षकों को अध्ययन में शामिल किया गया।

विद्यालयों एवं शिक्षकों के चयन में बहु-स्तरीय यादृच्छिक नमूना चयन पद्धति का प्रयोग किया गया। सर्वप्रथम मैथा विकासखंड के अंतर्गत आने वाले उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों की सूची तैयार की गई। इसके पश्चात अध्ययन की आवश्यकताओं एवं विद्यालयों के प्रतिनिधित्व को ध्यान में रखते हुए विद्यालयों का चयन किया गया। चयनित विद्यालयों से शिक्षकों की सूची प्राप्त करने के बाद निर्धारित मानदंडों के अनुरूप शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया।

7. शोध उपकरण

अध्ययन में दोनों प्रमुख चरों के मापन के लिए मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया।

7.1 मानसिक स्थिति मापनी

शिक्षकों की मानसिक स्थिति के मापन हेतु डॉ. अरुण कुमार सिंह एवं डॉ. अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित मानकीकृत 'मानसिक स्वास्थ्य मापनी' (MHS) का प्रयोग किया गया। इस मापनी के मैनुअल में दिए गए मानकों (Norms) के अनुसार प्राप्तांकों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है— उच्च मानसिक स्वास्थ्य स्तर, औसत मानसिक स्वास्थ्य स्तर तथा निम्न मानसिक स्वास्थ्य स्तर। यह मापनी हिंदी में उपलब्ध है तथा इसकी विश्वसनीयता गुणांक 0.86 और संतोषजनक वैधता स्थापित है।

7.2 शिक्षण प्रभावशीलता मापनी

शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के मापन हेतु प्रो. उम्मे कुलसुम द्वारा निर्मित मानकीकृत 'शिक्षक प्रभावशीलता मापनी' (TES) का प्रयोग किया गया। यह मापनी कक्षा प्रबंधन, विषय प्रस्तुतीकरण एवं संवादात्मक दक्षता जैसे प्रमुख आयामों का आकलन करती है। इसकी समग्र विश्वसनीयता गुणांक 0.82 तथा वैधता संतोषजनक है। मापनी के मानकों (Norms) के अनुसार प्राप्तांकों को तीन श्रेणियों—उच्च, औसत एवं निम्न शिक्षण प्रभावशीलता में वर्गीकृत किया जाता है।

8. आँकड़ा संग्रह प्रक्रिया

आँकड़े एकत्र करने के लिए सर्वप्रथम चयनित माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य अथवा प्रधानाध्यापक से संपर्क किया गया। उन्हें अध्ययन के उद्देश्य तथा इसकी आवश्यकता के बारे में संक्षेप में जानकारी दी गई। उनकी अनुमति प्राप्त करने के बाद चयनित शिक्षकों से संपर्क किया गया और उन्हें शोध से संबंधित आवश्यक जानकारी दी गई।

इसके बाद शिक्षकों को मानसिक स्थिति तथा शिक्षण प्रभावशीलता से संबंधित शोध उपकरण उपलब्ध कराए गए। शिक्षकों से अनुरोध किया गया कि वे प्रत्येक कथन को ध्यानपूर्वक पढ़कर अपनी वास्तविक स्थिति और अनुभव के आधार पर उत्तर दें। उन्हें यह भी स्पष्ट किया गया कि शोध में सही या गलत उत्तर जैसी कोई बात नहीं है; इसलिए बिना किसी झिझक के ईमानदारी से उत्तर देना ही अध्ययन के लिए सबसे उपयोगी रहेगा। शिक्षकों को यह विश्वास भी दिलाया गया कि उनके द्वारा दी गई जानकारी को गोपनीय रखा जाएगा और उसका उपयोग केवल शैक्षिक एवं शोध संबंधी उद्देश्य के लिए किया जाएगा। इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि उत्तर देते समय शिक्षक किसी प्रकार के बाहरी दबाव में न रहें।

प्रश्नावलियाँ प्राप्त होने के बाद उनकी सावधानीपूर्वक जाँच की गई। जिन प्रश्नावलियों में आवश्यक सूचनाएँ पूरी थीं, उन्हें अंतिम विश्लेषण में शामिल किया गया। अपूर्ण अथवा आवश्यक जानकारी के बिना छोड़ी गई प्रश्नावलियों को विश्लेषण से अलग रखा गया। इस प्रकार प्राप्त आँकड़ों को व्यवस्थित करके आगे सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए तैयार किया गया।

9. सांख्यिकीय तकनीक

अध्ययन के तीनों उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए निम्न सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया—

पहले उद्देश्य, अर्थात् माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति का अध्ययन करने के लिए मध्यमान तथा मानक विचलन का प्रयोग किया गया। मध्यमान से शिक्षकों की मानसिक स्थिति का औसत स्तर ज्ञात किया गया, जबकि मानक विचलन के माध्यम से प्राप्तांकों में पाई जाने वाली भिन्नता को समझने का प्रयास किया गया।

दूसरे उद्देश्य, अर्थात् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करने के लिए भी मध्यमान तथा मानक विचलन का प्रयोग किया गया। इससे यह जानने में सहायता मिली कि अध्ययन में सम्मिलित शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का औसत स्तर क्या रहा और उनके प्राप्तांकों में कितना अंतर पाया गया।

तीसरे उद्देश्य, अर्थात् शिक्षकों की मानसिक स्थिति एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य संबंध ज्ञात करने के लिए पियर्सन उत्पाद-आघूर्ण सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया। इस तकनीक के माध्यम से यह पता लगाने का प्रयास किया गया कि दोनों चरों में आपसी संबंध किस दिशा में है और उसकी मात्रा कितनी है।

10. आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

10.1 माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति

उद्देश्य 1: माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति का अध्ययन करना।

तालिका 1: मानसिक स्थिति का वर्णनात्मक विश्लेषण

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
मानसिक स्थिति	120	156.18	18.74

तालिका 1 (क): शिक्षकों की मानसिक स्थिति के स्तरों का प्रतिशत वितरण

मानसिक स्थिति का स्तर	प्राप्तांक सीमा	शिक्षकों की संख्या	प्रतिशत (%)
उच्च (High)	165 और उससे अधिक	28	23.33%
औसत / सामान्य (Average)	145 – 164	74	61.67%
निम्न (Low)	144 या उससे कम	18	15.00%
कुल (Total)	—	**120**	**100%**

तालिका 1 एवं तालिका 1(क) के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 120 माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों की मानसिक स्थिति का समग्र मध्यमान 156.18 तथा मानक विचलन 18.74 प्राप्त हुआ। मापनी में निर्धारित मानकों के आधार पर 156.18 का मध्यमान शिक्षकों की मानसिक स्थिति को समग्र रूप से 'औसत/सामान्य' स्तर पर दर्शाता है।

स्तरवार प्राप्त परिणामों से पता चलता है कि 61.67% शिक्षक औसत मानसिक स्थिति, 23.33% शिक्षक उच्च मानसिक स्थिति तथा 15.00% शिक्षक निम्न मानसिक स्थिति की श्रेणी में पाए गए। इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश शिक्षक औसत मानसिक स्थिति के स्तर पर हैं। वहीं, लगभग 15 प्रतिशत शिक्षकों का निम्न स्तर की श्रेणी में पाया जाना भी ध्यान देने योग्य है। ऐसे शिक्षकों की कार्य-संबंधी परिस्थितियों और आवश्यक सहयोग पर विद्यालय स्तर पर ध्यान दिया जाना उपयोगी हो सकता है।

10.2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता

उद्देश्य 2: माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

तालिका 2 : शिक्षण प्रभावशीलता का वर्णनात्मक विश्लेषण

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
शिक्षण प्रभावशीलता	120	72.61	8.76

तालिका 2 (क): शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के स्तरों का प्रतिशत वितरण

शिक्षण प्रभावशीलता स्तर	प्राप्तांक सीमा	शिक्षकों की संख्या	प्रतिशत
उच्च प्रभावशीलता (High)	78 और उससे अधिक	26	21.67%
औसत प्रभावशीलता (Average)	65 – 77	78	65.00%
निम्न प्रभावशीलता (Low)	64 या उससे कम	16	13.33%
कुल (Total)	**—**	**120**	**100%**

तालिका 2 एवं तालिका 2(क) के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 120 माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का समग्र मध्यमान 72.61 तथा मानक विचलन 8.76 प्राप्त हुआ। मापनी में निर्धारित मानकों के आधार पर 72.61 का मध्यमान शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता को समग्र रूप से 'संतोषजनक/औसत' स्तर पर दर्शाता है।

स्तरवार वर्गीकरण से ज्ञात होता है कि 65.00% शिक्षक औसत प्रभावशीलता, 21.67% शिक्षक उच्च प्रभावशीलता तथा 13.33% शिक्षक निम्न प्रभावशीलता की श्रेणी में पाए गए। इससे यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश शिक्षक औसत स्तर की शिक्षण प्रभावशीलता रखते हैं। उच्च प्रभावशीलता वाले शिक्षकों का प्रतिशत भी उल्लेखनीय है, जबकि कुछ शिक्षक निम्न प्रभावशीलता स्तर पर पाए गए।

10.3 मानसिक स्थिति एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य संबंध

उद्देश्य 3: माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य संबंध ज्ञात करना।

तालिका 3 : मानसिक स्थिति एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसंबंध

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	सहसंबंध गुणांक
मानसिक स्थिति	120	156.18	18.74	**0.41**
शिक्षण प्रभावशीलता	120	72.61	8.76	

मानसिक स्थिति एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य पियर्सन उत्पाद-आघूर्ण सहसंबंध गुणांक $r = 0.41$ प्राप्त हुआ। यह दोनों चरों के मध्य सकारात्मक मध्यम स्तर के संबंध को दर्शाता है।

120 शिक्षकों के नमूने में $r = 0.41$ का प्राप्त सहसंबंध सांख्यिकीय रूप से सार्थक है ($p < .01$)। इसलिए निर्धारित शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है। अर्थात् अध्ययन के प्राप्त आँकड़ों के आधार पर

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 6, Issue 4, April 2026
Impact Factor: 5.731

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सार्थक सकारात्मक संबंध पाया गया।

इसका सरल अर्थ यह है कि जिन शिक्षकों के मानसिक स्थिति संबंधी प्राप्तांक अपेक्षाकृत बेहतर रहे, उनमें शिक्षण प्रभावशीलता के प्राप्तांक भी सामान्यतः अपेक्षाकृत अधिक पाए गए।

10.4 परिकल्पना का परीक्षण

शून्य परिकल्पना

"माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।"

प्राप्त सहसंबंध गुणांक: $\mathbf{r = 0.41, p < .01}$

चूँकि प्राप्त संबंध 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है, इसलिए शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है। अतः निष्कर्ष निकाला गया कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सार्थक सकारात्मक संबंध है।

10.5. प्रमुख निष्कर्ष

अध्ययन के तीन निर्धारित उद्देश्यों के आधार पर निम्न प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त हुए—

1. अध्ययन में सम्मिलित 120 माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की मानसिक स्थिति का मध्यमान **156.18** पाया गया।
2. मानसिक स्थिति के प्राप्तांकों का मानक विचलन **18.74** रहा।
3. 120 शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान **72.61** पाया गया।
4. शिक्षण प्रभावशीलता के प्राप्तांकों का मानक विचलन **8.76** रहा।
5. मानसिक स्थिति एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य **0.41 का सकारात्मक सहसंबंध** प्राप्त हुआ।
6. प्राप्त सहसंबंध **0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक** पाया गया।
7. इससे संकेत मिलता है कि बेहतर मानसिक स्थिति और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच सकारात्मक संबंध विद्यमान है।
8. हालांकि इस संबंध को कारण-परिणाम के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए।

Copyright to IJETIR
www.iciset.in

11. शैक्षिक निहितार्थ

अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक की मानसिक स्थिति और उसकी शिक्षण प्रभावशीलता को शिक्षा की गुणवत्ता से अलग करके नहीं देखा जा सकता। इसके आधार पर निम्न शैक्षिक निहितार्थ सामने आते हैं—

11.1 शिक्षक कल्याण पर ध्यान

विद्यालयी गुणवत्ता सुधार की योजनाओं में शिक्षक के मानसिक एवं भावनात्मक कल्याण को भी उचित स्थान दिया जाना चाहिए।

11.2 तनाव प्रबंधन

शिक्षकों के लिए समय-समय पर तनाव प्रबंधन और मानसिक संतुलन से संबंधित छोटे-छोटे प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं।

11.3 सहयोगपूर्ण वातावरण

विद्यालय में ऐसा वातावरण बनाया जाना चाहिए जहाँ शिक्षक अपनी कार्य-संबंधी कठिनाइयों को बिना झिझक साझा कर सकें। हर समस्या का समाधान फाइल में नहीं, कभी-कभी बातचीत में भी मिल जाता है।

11.4 परामर्श सुविधा

आवश्यकता के अनुसार शिक्षकों के लिए उचित परामर्श सुविधा उपलब्ध कराई जानी चाहिए, ताकि वे कार्य-संबंधी मानसिक दबाव को बेहतर ढंग से संभाल सकें।

11.5 संतुलित कार्यभार

शिक्षकों पर अनावश्यक गैर-शैक्षणिक कार्यों का बोझ कम करने का प्रयास किया जाना चाहिए, जिससे वे अपने मुख्य दायित्व अर्थात् शिक्षण पर पर्याप्त ध्यान दे सकें।

12. अध्ययन की सीमाएँ

1. अध्ययन केवल कानपुर देहात जनपद के माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित है।
2. अध्ययन में केवल 120 शिक्षक सम्मिलित किए गए हैं।
3. अध्ययन में मानसिक स्थिति और शिक्षण प्रभावशीलता दो प्रमुख चरों पर ही ध्यान केंद्रित किया गया है।
4. अध्ययन में स्व-विवरणात्मक मापनी के प्रयोग के कारण उत्तरों में व्यक्तिगत धारणा का प्रभाव हो सकता है।

5. अध्ययन सहसंबंधात्मक प्रकृति का है; इसलिए इससे कारण-परिणाम संबंध स्थापित नहीं किया जा सकता।
6. शिक्षक की मानसिक स्थिति समय, व्यक्तिगत परिस्थितियों और कार्यपरिस्थितियों के अनुसार बदल सकती है।

13. भविष्य के शोध के लिए सुझाव

भविष्य के शोध में—

1. मानसिक स्थिति एवं विद्यार्थी उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया जा सकता है।
2. शिक्षक तनाव एवं शिक्षण प्रभावशीलता के संबंध का अध्ययन किया जा सकता है।
3. शिक्षक संतुष्टि और मानसिक स्थिति के बीच संबंध का अध्ययन किया जा सकता है।
4. शिक्षक की भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य संबंध का अध्ययन किया जा सकता है।

14. निष्कर्ष

माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। उसकी शिक्षण प्रभावशीलता केवल विषय के ज्ञान और पढ़ाने की क्षमता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसकी मानसिक स्थिति का भी उसके कार्य-व्यवहार पर प्रभाव पड़ सकता है। शिक्षकों की मानवीय एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की उपेक्षा कर शिक्षण गुणवत्ता में सतत सुधार संभव नहीं है

प्रस्तुत अध्ययन में 120 माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की मानसिक स्थिति एवं शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया। प्राप्त आँकड़ों के अनुसार शिक्षकों की मानसिक स्थिति का मध्यमान 156.18 तथा शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान 72.61 पाया गया। दोनों चरों के बीच 0.41 का सकारात्मक एवं मध्यम स्तर का सहसंबंध प्राप्त हुआ। इस परिणाम से यह संकेत मिलता है कि जिन शिक्षकों की मानसिक स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है, उनमें शिक्षण प्रभावशीलता भी अपेक्षाकृत बेहतर दिखाई देती है। हालांकि, इस सहसंबंध के आधार पर यह कहना उचित नहीं होगा कि मानसिक स्थिति ही शिक्षण प्रभावशीलता में सुधार का कारण है। इसके पीछे अन्य व्यक्तिगत, विद्यालयी और व्यावसायिक परिस्थितियाँ भी भूमिका निभा सकती हैं।

अतः विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए केवल विद्यार्थियों की उपलब्धियों पर ध्यान देना पर्याप्त नहीं है। शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य, कार्यभार, कार्यपरिस्थितियों और व्यावसायिक कल्याण को भी उचित महत्व दिया जाना चाहिए। स्वस्थ और संतुलित शिक्षक अपने शिक्षण कार्य को अधिक सहजता और प्रभावी ढंग से करने में सक्षम हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. Kundu, A., & Bej, T. (2024). Relationship between mental health and teaching efficacy of Indian school teachers: A moderated mediation model of autonomy and emotional intelligence. Journal of School and Educational Psychology, 4(1), 11–29. https://doi.org/10.47602/josep.v4i1.71
2. Kundu, A., & Bej, T. (2024). Relationship between psychological distress and teaching efficacy of Indian elementary school teachers: A moderated mediation model. Contemporary School Psychology. https://doi.org/10.1007/s40688-024-00526-3
3. Tikader, B., & Acharya, A. K. (2025). Mental health challenges among secondary school teachers: A systematic review. International Journal of Indian Psychology, 13(2), 4232–4248. https://doi.org/10.25215/1302.374
4. Liang, M. L., Ho, G. W. K., & Christensen, M. C. (2025). Secondary school teachers' experiences of supporting students with mental health issues: A systematic review and meta-aggregation of qualitative studies. Frontiers in Psychiatry, 15, 1396008. https://doi.org/10.3389/fpsyt.2024.1396008
5. Kumara, S. K. (2017). Teacher effectiveness of secondary school teachers in relation to their mental health, stress and job satisfaction. Asian Journal of Development Matters, 11(2), 179–187.
6. Thapliyal, P., Joshi, A., & Asthana, A. K. (2011). Teacher effectiveness in relation to mental health and burn-out of teachers at senior secondary level. Psychological Research, 34(1).
7. Jagadish, & Srivastava, A. K. (1983). Mental health inventory. Manovigyanik Parikshan Sansthan.
8. Srivastava, A. K., & Singh, A. P. (1981). Occupational stress index. Manovigyanik Parikshan Sansthan.
9. Kulsum, U. (2000). Teacher effectiveness scale. National Psychological Corporation.
10. Gupta, S. P., & Kumar, S. (2008). Mental health scale. Rupa Psychological Centre.
11. Sharma, D., & Siddiqui, M. H. (2023). Teacher's mental health scale. Prasad Psycho Corporation.
12. Alivernini, F., Cavicchiolo, E., Manganelli, S., Chirico, A., & Lucidi, F. (2019). Support for autonomy at school predicts immigrant adolescents' psychological well-being. Journal of Immigrant and Minority Health, 21(4), 761–766. https://doi.org/10.1007/s10903-018-0839-x
13. Ruiz-Alfonso, Z., et al. (2021). Teacher well-being and teaching effectiveness: Psychological and professional perspectives. Teaching and Teacher Education.
14. Glazzard, J. (2018). The impact of teacher stress and workload on teachers' professional well-being. Education Sciences..